

# पल्लव

वर्ष : २

अंक : ६

पूर्णाङ्क : १५

२०५१ चैत

सम्पादक तथा प्रकाशक : धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सहयोगी : नीरज कर्ण, कृपा घीक आ सुनील पुरी

प्रतिनिधि : जमेश भगत (विराटनगर), श्यामसुन्दर कापड़ि 'शशि' (जनकपुरधाम)

कम्प्यूटर सेटिङ्ग : भ्याली कम्प्यूटर सर्भिस, पुतलीसङ्क चौक, बागबजार, काठमाण्डू

अङ्कक आर्थिक सहयोगी : डा. मणिकान्त ठाकुर, फुलेर्टन, कैलिफोर्निया, अमेरिका

## गजल अंक

### पल्लव-ध्वनि

प्रस्तुत अङ्क-पल्लवक चौरप्रतीक्षित गजल अंक । मूलतः उर्दू-फारसीक रचनात्मक विद्या मानल जाइत गजल वर्तमानधरि अबैत-अबैत दक्षिण एशियाइ प्रायः सम्पूर्ण भाषामे एतेक नै रचि-बसि गेल अछि जे प्रत्येक भाषाक साहित्यमे ई अपन महत्वपूर्ण स्थान बना लेलक अछि । गजलक अङ्क विस्तृत यात्रामे एतने आधारभूत परिवर्तन भेलैक जे सुरा-सुन्दरीक वर्णनक संकुचित घेरासँ बाहर भ जिनगीक विविध पक्षक चित्र प्रस्तुत करबाक प्रयत्न करैत अङ्कमे सफलतः पाब' लागल गजल ।

शास्त्रीयताक बंजीरसँ जकड़ाएल मानसिकताक कारणेँ एक शताब्दीपूर्व पं. जीवन भट्टाचार्य मैथिलीमे शुरू करल गेल गजल-यात्राके मैथिली साहित्य आदर्भ एक दशक पूर्वधरि सेहो नीक बर्का नै स्वीकारने छल । मुदा एकरा गजलकारसभक दुइ आत्मबलेक प्रभाव कहल जाए जे मैथिली गजलक गाछ भरपूर मात्रामे चतरि गेल । डा. तारानन्द वियोगी वर्ष १९८१ के अङ्क लेल गजल वर्ष कहने छथि जे ओइ वर्ष विभिन्न पत्रपत्रिकामे ३८ टा गजल छपल । मुदा पल्लवक अही अङ्कमेटा लगभग ओतने गजलकारके स्याविष्ट करबाक सुयोग भेटल अछि, जे गजलक सुदृढ स्थितिक प्रमाण बनि उपस्थित अछि ।

मैथिली गजलके समृद्ध बनेबामे जिनकरसभक महत्वपूर्ण स्थान छनि, प्रायः हुनका सबक्योसंग पल्लव नियमित रूपमे गेल करैत अछि । हुनकरसभक सहभागिता अङ्क गजल अङ्कमे पाबि गौरवान्वित हेबाक अपेक्षा छल । अही अपेक्षा किंवा मोहसँ गजल अङ्क प्रकाशनमे विरोध विलम्ब भ गेल । तैयो अपेक्षित सम्पूर्ण गजलकारक गजल प्राप्त नै भ सकल । गर्वक नात यह जे गजलके अङ्क उँचाइपर पहुँचबामे पर्याप्त योगदान देनिहार स्व. कलानन्द भट्टक गजल छापबाक सौभाग्य भेटल अछि जे स्व. महु मृत्युसँ दोशे दिन पूर्व पछौने छलाह ।

समाग्रमे गजल अङ्क अपेक्षित स्तरीय नै भ पेनाक बातके स्वीकारैत हुनकरसभसँ समा याचना करैत छी, जे गजल त पछौने मुदा छापल नै जा सकल ।

स्व. कलानन्द भट्ट

मिनाज बीसवी सदीक बहुत गर्म भेल छै  
कूर, हिंसक, छली ओ आदमखोर भेल छै

पीने दारू बताह, लोक-साजक ने पाह  
देह भभकैत घवाह, खूने-खून भेल छै

शील भंग, हत्या करबैछ कतौ आत्मदाह  
कतौ बरवर उन्माद जातिक बिस्फोट भेल छै

महाराहल राति-दिन युद्धकेर विभीषिका  
फेरो धारपर कृपाणकेर शान भेल छै

शंकामे विध्वंसक आइ जीबिरहल लोक  
अविवेकी अधिकारमे अणुबम भेल छै

श्री राज

भमरा बन्हा ने जाए से, फूलक दुलारमे  
जोगिन नजरिके टोना, लागए कटार ने

नभसँ नजरि बचाक' जन्ना निहुरि सकैए  
पुनोक राति चकमक, बीतए जन्हार ने

सामर सिनेही बदरा, नदियोक ही नुरवै  
नै भेटए उताप मनके, साजीनक फुहारमे

सुरूजक पुरुब आ परिचम दिनमे बगन निहारी  
भय हियमे समाए रातुक लागए पहाड़ ने

कतबो मनाबी मनके, शंका बनल रहैए  
मीझए ने आरा दियना, नोरक टधारमे

स्व. भट्टक स्मृतिमे

फूलचन्द्र भा 'प्रवीण'

धोरे-धोरे की ई सजा देलकै  
रातिकेर चानके मुका सेलकै

टुकटुक ताकिएरहल सबकियो  
कजपरिमे कत' हुना देलकै

भरिनयनो ने रूप देखि सकल  
वासरूप त फिलमिला देलकै

शिशिरक चाँदनी केहन शीतल  
गंध रग-रगमे समा देलकै

हएत संध्या कखन उगत जन्ना  
'प्रवीण'क प्राणके हरा देलकै

रमानन्द रेणु

आजुक जीत ने जीत हारि आधार बनल अछि  
आजुक रीति कुरीति नीति आधार बनल अछि

सम्बन्धक सन्यास अपरिचित परिचित अछि  
बंधन मुक्तिक गीत आइ साकर बनल अछि

पोसल स्वप्नक तार टूटि छिड़िजाएल सगरो  
आइ प्रीति दुर्नीति नियम निस्तार बनल अछि

कंचन-प्रति आकृष्ट कर्म बाधित नेतृत्वक  
जन-सहयोग निरंतर टूटल तार बनल अछि

प्रतिस्पर्धा अछि अर्थ-संकलन साँपक चकरी  
लोक मनोरथ फोंक आइ अधिकार बनल अछि

सीफल सब संयोग भोग सब रोगक सक्षण  
दिशाहीन जड़-सागर उमड़ल ज्वार बनल अछि

कीर्तनमे भ व्यस्त अपन सब व्योत निसरलौ  
देश बिकाएल, सेवा आइ सुतार बनल अछि

अपनेमे हम जड़ी-भरी बनका सेखें की  
मुखियाके मुह चाउर, यह व्यापार बनल अछि

सियाराम भा 'सरस'

फिलमिलीके उछ त दिय  
चान्दनी जगमगा त दिय

भाव जप्प इ पकड़ि लेब हम  
अहाँ छेरे हिला त दिय

चान शरदक चमकत कोना  
मेघ केशक हटा त दिय

प्रेम मन्दिरमे पूजा छियै  
फूल मुस्की खसा त दिय

हमर तनमन सुचालक अखन  
बिजलिये झनझना त दिय

तेज नयनक 'सरस' घोंटसँ  
सेजके जगमगा त दिय



### डा. राजेन्द्र विमल

हो महल का मईया, हमसान-सन जरूरी है  
जीवाक हेतु धर्म किछु भगवान-सन जरूरी है

गढ़ि-गढ़िक' जन्मकर, जोहिरहम छी प्रकश  
विधिकेर अधिराज ई, बरदान-सन जरूरी है

छेनी जहाँ छीनि सेनी, नहसँ हम गढ़ब जान  
अहँक धर्म अमा, हमर जान-सन जरूरी है

पाप जँ पिक प्यार ह, पापी रह' दिय  
बचनक अनुभूति, मोख-जान-सन जरूरी है

नोरमे फलाएत गनल-कमल हमर नै छीन  
हारम 'विमल' सिकन्दर महान-सन जरूरी है

जहाँक जरकर लागल रक्त आइ पुखिरहल  
इन्सानकेर महास की इन्सान-सन जरूरी है ?

### डा. रामदेव झा

गये-गये गाम हमर शहर बनल जाइए  
आब मान्य नितदिन अकरहर बनल जाइए

गढ़ल-मढ़ल नेह-गेह भरि-भरि लँघिरहल  
गामक अपराहु आब महर बनल जाइए

टोल-टोल गच्छ-गोल हीत-मीत तोड़ि-छोड़ि  
नीर-बीर फरक होइत जहर बनल जाइए

हेम-छेम प्रीति-रीति भरल सरस धार प्रकृत  
रोकि-छेकि उच्च-बुच्च छहर बनल जाइए

घोर तमस-बढ़ विवस मुक्ति-किरण-रेखालए  
आस-बाट तर्कत पल पहर बनल जाइए

### बैकुण्ठ विदेह

जगतक सब व्यापार चलेए चक्कूसँ  
प्रजातन्त्र सरकार चलेए चक्कूसँ

ब्रह्मपुत्र आ व्यास लाल छल पहिनहिंसँ  
गंगोमे पतवार चलेए चक्कूसँ

कहुना कटलै सति मुदा की आब हेतै  
दिनुको पहर अन्तार रहैए चक्कूसँ

बापक माय छसल छै ठेहनुसँ निच्चा  
आब पुत्र अधिकार मंगैए चक्कूसँ

एकलव्यक चिन्ता ककरा छैक एत'  
सब अप्पन संसार रहैए चक्कूसँ

न्याय, संविधानक सब गप्प अनर्गल धिक  
सब 'धारा'मे धार पड़ैए चक्कूसँ

ई महफाक नियति की छै से के जानए  
कैपत जकर कहार चलेए चक्कूसँ

सत्य कहाँसँ भेटत पढ़बा-सुनबालए  
सब आखर-अखवार छपैए चक्कूसँ

### रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

अहाँ जातक बेअर्थ लगा मुह फुला बैसै छी  
मानोक भाव अपने बूझि मुह फुला बैसै छी

जकर तहघरि पहँचब अछि दुरूह जहाँक लेल  
तैयो बलधिगरोपर उतरि मुह फुला बैसै छी

चातनिकेर छेद गनल धनै ने अपने कहियो  
सूपक छिद्र ताकि-ताकि मुह फुला बैसै छी

कर्तव्यक चट्टान जोड़पार वासन्ती बहार सजल  
अनुयायक 'ज' विनु पढ़ने मुह फुला बैसै छी

दम्भ हएत, स्नेह-घोट अहीसँ बहराइछ अरे  
बिक्रीहीन मोदा की ? मुह फुला बैसै छी

### रमेश

हम जखन-जखन अस्तित्व अहाँपर ओड़ि देलौ  
अहाँ तखन-तखन सतरंगी सपना तोड़ि देलौ

हम सोचलौ प्रेमक दीप जराएब जीवनभरि  
अहाँ कोबरमे अहिबातक पातिल फोड़ि देलौ

हम डोपटासँ आँचरके कसिक' बान्ही, पर  
अहाँ बहुअक घरसँ पहिनहि आँगुर छोड़ि देलौ

हम स्वर्णिम-स्वर्णिम कामनाक नित सेज सजी  
अहाँ कारी-कारी मोसि ताइपर बोरि देलौ

हम हाथ पकड़लौ अहाँक, बसन्ती बिनगीलए  
अहाँ छु भेल पतफड़सँ नाता जोड़ि देलौ

हम पुष्प-वाण संचालन सृष्टिक रचनालए  
अहाँ पञ्चम-स्वरसँ पहिने बीणा फोड़ि देलौ

### डा. शोफालिका वर्मा

सागरमे आगि बिजली आसमानमे  
बैचेनी कत' ओ ने अछि हमर प्राणमे

दिन एहनो आएल हमर बिनगीमे  
बुफलौ जे अपन मिलल छल आनमे

बिनगीक रंग-रंग की देखी हुनकर  
छनि रूप बदलैत छन-छन आसमानमे

नीब पड़ल नोरक धारपर जकर  
ढहैतरहल हरदम जो महलक शानमे

के जाए उपरबलासँ ई पूछि आओत  
बना' मिटेनाइ अछि कोन विधानमे

ओ संग-संग हमर चलि त रहल छधि  
मोन भटकल छैक हुनक कोनो ध्यानमे

गीत 'शोफाली' दिलक ई आगि धिक  
बूझि नै ओ पबैत छधि नशाक तानमे

### शीतल झा

प्रदूषित पानि छै मुदा फरनाक मधुर गान छै  
छोटछिन ई देश मुदा देश त महान छै

शाहदेवक महादेवक पूजाक घुमि अह देशमे  
पुरहितक सरकार जहन नौकी जन जजमान छै

जुत' पहिने बीस वर्षक बूढ़सब औघाड़त छल  
तत' मस्त नाचिरहल साठि वर्षक जवान छै

पग-पगपर देव, प्रहरी, रक्षक जत' छह छधि  
तै त बालिकाक लेल भोजनालय स्थापन छै

दरिद्रता अछि भागिरहल अथ आ आभारसँ  
प्रजातन्त्र आएल तै त हिन्दुओके रमजान छै

### गोपालजी झा 'गोपेश'

छी सत्ताक गलियारीमे त मोटरक किए डर  
उक्खड़िमे जखन मुह डेल, समाठक किए डर

नै बनबालए 'हरिश्चन्द्र' छेने छी सम्पत  
तै देनामे जनताके आरवासन कोन डर

करू पाषणक रेक्टिस-जुनि व्याकरणक तातम्य  
कसने रहू लगामटा, नै इन-बदलकेर डर

अछि जनल जँ राजनीति जन्तहीन प्रक्रिया  
उष्ण-पटक निरन्तर, केओ उप्पर-केओ तर

'गोपेश' होइ सचेत, अछि ऊठन विश्वास  
बैसबैछ तै निर्धोख सब अपन-अपन गर

### प्रेमचन्द्र पंकज

एहने छै दुनिया एहने समाज छै  
परबाक खोला हड़पि लैत बाज छै

नमरी-चपसटकहीक नोर के पोछतै ?  
सगरो बजारमे महगीएक राज छै

यदि लाभ अहाँसँ, मतलब अहीसँ तखन  
बैमतलब अहाँसँ ककरा की काज छै ?

अफिसमे काज चलत उपहारक नामपर  
नाम छैक नब, मुदा पुरने रेबाज छै

### पं. नित्यानन्द मिश्र

घोन्हि फटिते गगन आर अन्हरा गेलै  
लाल उगिते सुरुज मेघ कचरा गेलै

मोन पसरल मनोरथ पधारे छलै  
रौद मकड़ा गेलै आस भकरा गेलै

मोन छल घर बनेबै त नीके जकाँ  
न्योसँ पहिने मुदा नौट-बखड़ा भेलै

खोल हाँसक पहिरि-ओड़ि बगुला एलै  
लोल चरिते मुदा आइ पकड़ा गेलै

मुह फूजन कोना चुप्प रहतै हमर  
आब देखिते-देखैत आँखि पघर गेलै



### शारदानन्द दास 'परिमल'

अखि दर्द सभक साँसमे समेटल अपन-अपन जानए नै केयो तिरबि गेल के, कत', कखन

चाह बागमे खोता लगा बनि गेल ई मुनियौ रखबारोके नै अखि पता केहन जमूय्य बन

अदभुत स्वरूप धारि ई प्रगटेत अखि तेना कखनो करील बनि बुने कखनो मुदुल सुमन

करीक इनिन कन्हक राधाक मुखि ओक विचरैत रिग-रिगत अखि क सीमो अतिक्रमण

लिपिबालए लेख रचनीगघाक लिपिमे चलेख त परर यारने तामसांधमे गहन

पछलेख आद मन बखन करुणाक कोरसँ मुनो सगैख सहजहि उमड़ल समुद्रसन

सिकता-कमक चमक तेना पसरैख चित्तमे पड़ि जाए छोट तखने अटावैरासए गगन

परतर करब योगेशसँ, संभव नै अखि मुदा बहुधा जीनैख आदमी लघु-नीलकंठसन

एकरे सुसौम्य गहि विभा धिरजैख तुलिक छवि अप्रतिम अथाह मुक्त कल्पना प्रवण

सिंहकैत ई गजलमे हो कि पुलकैत गीतमे व्यक्तित्व भजा जाए एकर पाबिक' तथन

### रमाकान्त राय 'रमा'

जीबालए बिनगी अखि, कहुनाक' जीबे छी गुपरी भेल चेधरीके गुमसुम हम सीबे छी

पौरुष पुरखाक छल, पुरुष हमहुँ कहानी पुरुषार्थक छूति कल' छूटल से हीनै छी

आसक तरेगनसंग, निरसल हम जान नभक रातुक अन्तरियाके ओजुर परि पीबै छी

कॉट-फूल, भाटि-पानि, आगि-छाउर एक्के, त अवसर-लग ओरि पीठ पेटक भर लीबै छी

कहियोक' भांग जर्क, कहियोकाल भाहुरसन धीपल जे चाह जर्क फूकि-फूकि पीबै छी

### महेन्द्रकुमार मिश्र

हम देखिक' जहाँके, सबकिछु भुला चुकल छी जीयब हम कोनाक', सबकिछु हेरा चुकल छी

हमर जिन्दगी अहाँ छी, हमरासँ मुह ने पोढ़ निभुर अहाँ केहन छी, बाती मिश्र चुकल छी

हमर चांदनी अहाँ छी, अहाँ जिन्दगीक मासिक पीड़ा कते सहब हम, सबकिछु लुटा चुकल छी

हम प्रेमकेर भिखारी, पापर अहाँ बनल छी शराब की पीयब हम, जते नोर पी चुकल छी

अहाँ प्रेम खेल समझी, हमर जिन्दगी नरक भेल बाब रोष छल जीवन, सबकिछु जरा चुकल छी

### धीरेन्द्र प्रेमर्षि

अस्तित्वक ज्ञानसँ आवाद भेल चेन्निया फतरल गुमानसँ बरकाद भेल चेन्निया

अपन खेत-खिरहानक आरि-धूर अपने लागल जे बनब' विवाद भेल चेन्निया

गोलीसँ छलनी न बदैतरहल आस्थासब करैत रक्त-तर्पण जन्माद भेल चेन्निया

जीतकारक गीत लोक मुनलक त कान पाधि बागम बिहाड़ि शंखनाद भेल चेन्निया

मत्स्य-न्याय हर्षित छल आर एक आहारसँ उठि गेल उजाहि न विषाद भेल चेन्निया

हमरो परिचयक घेंट छपटिरहल अखि राति बारि दिय दीप आब सम्वाद भेल चेन्निया

### चन्द्रेश

रग-रग फनकिरहल लिधुरक उवालपर जी चटपटारहल जातिक सबालपर

घाओ जत'-तत' दाओ भितरघात राजनीतिक उठल संकुल बचालपर

रजिते इतिहास रजित पात - पात टुभकै अखि जीवन भोजक गदालपर

गीत बनैख दर्द दहशतिक आँखिमे जान नुनए सपना सुरुजक मशालपर

मनुखे लिधुराए गीत बनल मनुख प्रश्ने जनगिनल देशक कपालपर

### विनोदानन्द

हम एक-एक पल जिनगीसँ लड़िरहल छी हम एक-एक कण चिनगीसँ बरिरहल छी

कॉट-कुशकेर नाटपर खाली पग चलि' हम एक-एक सग कनगीपर फरिरहल छी

सुनगिरहल पजरिरहल छी रावानल जर्क व्यवधानक सिक्किडसँ जकड़िरहल छी

राति हो वा दिनो, सतत कर्मकेर कोरामे हम प्रकृतिके सनकीसँ हकूरिरहल छी

हारल, हारब मुदा संघर्षक आगि पजारब दृढ़ संकल्पित सत्यज्योति बनि बरिरहल छी

### दिलिपकुमार झा 'दीवाना'

कन्दन-हाहाकार भेटल थोरे-थोर शिशुक चीत्कार भेटल थोरे-थोर

हम त चाहल हँसीक फूल खिलए मुदा दर्द उधार भेटल थोरे-थोर

संवेदना न जहिना विदा भेलौ हम पूरा खूजल बनार भेटल थोरे-थोर

कविता कहुना लिखी कालक नाम बस एतने अधिकार भेटल थोरे-थोर

### वैजनाथ मिश्र 'बैजू'

हे भाइ अहाँसँ बात एक पूछी हम बान्हल घरके एना किए उबारै छी ?

धूर जे भिन्न गेल ओकरा भिन्नए दियो ओहिमे निहहेस द फेर किए पजारै छी ?

एतेक जहाँ खेनौ तैयो ने बरल पेट खापड़िमे जान द फेर किए लाइ छी ?

जे अखि बलभर तकरालन डर होइए हमरालन बेर-बेर गह्र किए पजारै छी ?

उल्टे जमाना अखि जहाँके की रोष दी ? हमरे चोरक' पुनि हमरे बनारै छी ।

### रोशन जनकपुरी

मुर्दाक बाहरमे थोर नै होइत अखि पापरक आँखिमे नोर नै होइत अखि

जानि नै कहियाधरि बूझत ई लोक, जे बघशालामे आत्माक ओर नै होइत अखि

आदमीक रक्त बहैख गीता-कुरान हेतु पसेनाक डकैतीमे शोर नै होइत अखि

रोटी चौरा-चौरा सोनक चमचा बनए केओ मुदा अइ खेलमे चोर नै होइत अखि

उदारवादी सेठजी बन्ककी नेने छवि 'क्वार'के तँ आतंकक समुद्रमे हिलकोर नै होइत अखि

पैलीमे घुसियारहल राजनीति जत' 'जनकपुरी' नाम बादमीक बोइ निजाममे छोर नै होइत अखि

### सारस्वत

नोचि लेबौ गाल तोहर, नोचि लेबौ दाढ़ी रौ जातिकेर मनसा तँ, तोड़ि देबौ गाढ़ी रौ

कोरनामे दूध नै, कोहामे मूस रौ घेने छै रूप तैयो, जोति लेबौ बाढ़ी रौ

गोबरमे गाछ भेल, गाछपर चिड़ै रौ के करीम, के रहीम, के किसुन-मुरारी रौ

पोयी उधार लेब, कनिथी उधार लेब लेबालए धर्म कोन, चलते पैकारी रौ

दूधपर जोस देत प्रेमकेर परिभाषा तखने समानकेर खुजतै बसादी रौ

### कर्ण संजय

नेहोरा करै छी कने मुक्तिपा दियो बेजाए नै सागए त कने कनखिया दियो

तरबा तपैए बलुपर चलैमे छाहरि न जेतै कने नट लहरिया दियो

डर बड़ होइए, नौक नौक छै प्रिये चलबे करब कने फूही फुहिया दियो

जान चमकैए, हृदयक आकाशमे आबि जाएत कोरबे कने आँचर छिरिया दियो



## सहयोग राशि : दू टका

पल्लव, जि. प्र. का., ल. पु., व. नं. - ११४/०५०/५१

म. हो. ह. नि., व. नं. - २१/०५१/५१

सम्पर्क पता : पो. ब. नं. - २७१५, काठमाण्डू, नेपाल

अथवा पुराना पता

फोन नं. ५२११५१

### श्यामसुन्दर 'शशि'

अपना अपनीक होइमे काटल-कटलसन भोक  
संगोर करबाक दोइमे फाटल-फटलसन लोक

पी रक्त रनितक छुटतक उदीस बर्क कधारहल  
कुसुता पलटबाक बेरमे बीतल-बीतलसन लोक

सुर शासक, मूढ सेवक, प्रष्ट नेताक कथे कोन  
विषदन्त तोइबाक मोरमे मातल-मतलसन लोक

बनकी पदस निमी-भूमि सिसकिरहल जनकसुता  
मुक्त करबाक बेरमे बीटल-बीटलसन लोक

जाति-वर्णक नामपर गुमसिरहल एकवालक कलाम  
तिलका देखेबाक तोइमे पाटल-पाटलसन लोक

कल्पित हृदयसँ दानकेर घट झरे-झरे पुगत की  
अखि याचनाकेर लोभमे साटल-साटलसन लोक

### अजितकुमार आजाद

हम सपना देखैत छी, सुरुज-चानकेर  
अद वरतीपर जगने, गहूम-धानकेर

मीठ मुसकी रहए, सबहक छेरपर  
बान्ह टूटए नै कहियो, कमला-बलानकेर

गरजए नै बन्दूक, फूटए नै बम  
गनती नै होबए जान, कहियो जानकेर

कहियो नै टूटए जान, स्नेहकेर सूत्र  
सुनी सदेश हमसब, आरती-बजानकेर

जीउ जिनगीके सब, हँसि-हँसिक' भाइ  
नीक सोची सदति हम, दुनिया-बहानकेर

### ललन दास

बात कहियो ई ककरा बेकर जिनगी  
होएत नाइत हमर आ देवार जिनगी

दुनियाके चुपैत छी कटि केवल  
फूल हमरा धुमै देकर जिनगी

सुन्दर नै शीतल नै छी ई इनोरिया  
जान लागै जिनगी बेकर जिनगी

जकरे हम साधी-सहारा बुझल  
भेल बैरी ते बहुकर बेकर जिनगी

मुरफाएस, सुखाएल ई निरस कथा  
थक भरसे जुआनी बेकर जिनगी

### धर्मेश विह्वल

अपनाके बेचि जिनगी तोरे नाम क देलियो  
मुर्दा बनि जीबाक तोरा इन्तजाम क देलियो

सीसो आ आम छल सब पहिने बिकल गेल  
बाँकी घदारियो तोरा जीवन-दान क देलियो

रक्तक सम्बन्ध त छल सब पहिने टूटि गेल  
कफनोक जोगाड़ क कष्ट निदान क देलियो

राति-रातिपर जागिक' छलियो तोरा सेवने  
सब राति आइ तोरा हम इनाम क देलियो

तोरा जँ नूहो त साझाए कने छै द दिहें  
आइ तोरा सबटा तिलतिस दान क देलियो

### सुरेन्द्र प्रभात

बसन्तक आगमनसंग मन टनमना उठल  
महलक दिवारोसंग छत गमगमा उठल  
बगुला समान ध्यान प्रियतमपर टांगल  
फगुआक सिंगारोसँ मन कनकना उठल

पतिआक पाँति पड़ि जाश छल ओ जीता  
चटिआक मास्टर प्रीति-पथ ओ पढ़ौता  
कल्पनाक सागरमे बिचरैत साँफ-भोर  
प्रीतक सवारोसंग चुर खनखना उठल

अहाँक उपस्थिति बिन दिन छल बन्हारसन  
भण्डारक सोन मन, तन छल कंगालसन  
शीतलताक संगी राशिकेर ज्योतिसम  
दुःखक पथारोमे गीत गनगना उठल

पिआक मिलनसंग फूल भेलै बम-बम  
स्वर आ संगीतसम पायलकेर छम-छम  
जानि नै किए हमर मन भेलै बताहिसन  
घावक केवार बन मन सनसना उठल

### अतुलकुमार मिश्र

देखिते देखैत राति बितौली देखिते ब'बाए भोर  
क्यारमे निखलाहापर, नै चलै मनुष्यक जोर

कोरामे बच्चा देखल त नगरमे भ गेल शोर  
सापँक बिषक एककेटा बस सापँके बिष तोड़

सगरो पसरल चोर-चोर, हृदयोमे एक चोर  
मस्तिष्क चोर नैछ, जाँघरक दूध आ बाँझक कोर

हमसब बाकल ककर नै हाँकल, अखि साटल होइ  
सोचक खोजसँ घाओ नै होइ, फाटम मस्तिष्कक जोड़

### रमेश रंजन

गुप्तैत खड्क जेतल हमर चेहरा  
खडेबाक मोहमे तीतल हमर चेहरा

बेना हो पक्षाण्ड चुर तहिना लागए सुख  
सुनगिक' पजरमालए शीतल हमर चेहरा

बोहै छी बाट गुमसुम खड्क खडेबाके  
लोना पधलि बनल पीतल हमर चेहरा

हिम्मत कनैए आइ किस्करे चालिसँ  
युग बादशाहक आब बीतल हमर चेहरा

मिटैबापर लागल अखि अपने लोक अपनाके  
देख-देख तमाशा ई रीतल हमर चेहरा

### कन्हैयालाल मिश्र

अहाँक पादके हरेक दिन धुपेलौ हम  
अपने नोरके अपन मीत बनेलौ हम

अहाँ बिना कोनो खुशी, मनके छलक नै  
बड़ा मुरिकलसँ अपन, बल्ल दबेलौ हम

सबकेओ अहाँसन नै, सब बेवफा निकलल  
चाँदनी रातिके 'उफ' कतेक बजेलौ हम

हर लगैत अखि कोनो दोसरसँ प्रीत करैत  
अहाँक प्यारसन कोनो प्यार नै पेलौ हम

अहाँ चलि आउ छुबिक' गरि जाएब हम  
अहाँ नै त किछु नै, संसारसँ पड़ेलौ हम

### गोविन्द दहाल

जीवनसँ डेराक' भागब कोनाक'  
अर्द्धमूर्च्छित परिधिमे, जागब कोनाक'

बेपरवाह रहब कहैत छी विश्वसँ कती दूर  
सीमा कर्तव्यक हम नाँधब कोनाक'

रिक्त भेल जीवन-घट सुटाएस, सब सठि गेल  
भीख श्वास-प्रश्वासकेर माँगब कोनाक'

सूपमहक भाटासन गुड़केत रहलौ सदा  
लक्ष्य बिना बाट कोनो नागब कोनाक'

एक-एकक' जिनगीकेर धूजल अर्पसब  
चौबटियापर स्वाभिमानके टाँगब कोनाक'